॥ ओ३म् ॥
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य-प्रेरणा

(आर्यसमाज राजेन्द्र नगर का मासिक पत्र)

वर्ष-2, अंक-10, मास मई 2023 विक्रमी संवत् 2080 दयानन्दाब्द 200 सृष्टि संवत् 1,96,08,53,123
कुल पृष्ठ 8 एक प्रति 5 रूपये वार्षिक शुल्क 50/- रूपये आजीवन 500/- रूपये
सम्पादक : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री www.aryasamajrajandernagar.org दूरभाष:- 011-40224701

पारस जिसे छूकर अमीचंद सोना बन गए

(भक्त अमीचंद की पुण्यतिथि पर विशेष रूप से प्रकाशित)

स्वामी दयानन्द 1877 को रावलपिंडी से चलकर झेलम पहुँचे। उन दिनों अमीचंद मेहता वहां के दरोगा थे। झेलम जिले पिण्डदादन खाँ तहसील के हरणपुर गांव निवासी अमीचंद मेहता तहसील में पहले लिपिक के रूप में नियुक्त हुए और उन्नति करते करते चुंगी के दारोगा के पद पर पहुँचे थे। गायन विद्या के प्रेमी होने के कारण मिरासियों और वेश्याओं की संगती में पड़कर पथभ्रस्ट हो गए थे। उन्होंने अपनी सती साध्वी पत्नी को त्याग दिया, मद्य व मांस से उन्हें कोई परहेज नहीं था। मालगुजारी के महकमे में कार्य करने के कारण रिश्वतखोर थे और मुफ्त का माल दिल बेरहम की कहावत को चरितार्थ करते हुए यह बेईमानी का पैसा शराब, कबाब और वेश्यावृति में लुटाते थे। आश्चर्य है कि विभिन्न व्यसनों तथा दुर्गुणों से ग्रस्त यह व्यक्ति उच्च कोटि का संगीतज्ञ तथा गान विद्या का रसिक था। जिस समय महर्षि दयानन्द के व्याख्यान जेहलम में हो रहे थे, उस समय स्थानीय सरकारी डॉक्टर के आग्रहवश अमीचंद मेहता भी महाराज के व्याख्यानों में जाने लगे। लोगों को आग्रह करने पर अमीचंद ने महर्षि के व्याख्यान प्रारम्भ होने से पूर्व एक अत्यंत रसीला भजन सुनाया, जिसे सुनकर सभी श्रोता मंत्रमुग्ध हो गये। महर्षि को जब गायक का पूरा परिचय मिला तो उन्होंने यही कहा, 'ठीक हो जायेगा, देखो, सुधर जाएगा।' दूसरे दिन पुनः जब मेहताजी अपना भजन गाकर निवृत हुए और उसके पश्चात, महाराज का व्याख्यान समाप्त हुआ तो उन्होंने कुपथगामी संगीतज्ञ अमीचंद की पीठ पर हाथ धरकर कहा-मेहताजी तुम हो तो हीरे, किन्तु कीचड़ में पड़े हो। युगपुरुष दयानन्द के मुख से अपने प्रति इस प्रकार की प्रशंसा वाक्य सुनते ही पापपक में आपाद मस्तक लिप्त रहनेवाले मेहताजी के नेत्र आँसुओं से भर आये। पश्चाताप के स्वर में आचार्य प्रवर के चरणों को स्पर्श कर कहा, ''महाराज यदि आपका आशीर्वाद प्राप्त होता रहा, तो आपने जैसा मुझे (हीरा) कहा है, वैसा ही बनकर दिखाऊँगा।

दूसरे दिन जब मेहता अमीचंद स्वामीजी की व्याख्यान सभा में उपस्थित हुए तो वे सर्वथा परिवर्तित व्यक्तित्व लेकर आये थे। दुराचारों और व्यसनों से उन्होंने मुँह मोड़ लिया था। अब उन्होंने जो स्वरचित गीत सभा में प्रस्तुत किया, वह दो अर्थक था। इसमें एक ओर जहाँ परमपिता की असीम करुणा तथा अनुकम्पा के प्रति अपना विनम्र कृतज्ञता भाव प्रदर्शित किया गया था, वहाँ उन्होंने इस लोक में अपने महान पथप्रदर्शक इस सन्यासी के प्रति भी आभार व्यक्त किया था। जिसकी प्रेरणा से उसके जीवन में यह सुखद परिवर्तन आ सका। आगे चलकर अमीचंद मेहता काव्य तथा संगीत के माध्यम से आर्यसमाज के प्रचार में जैसा योगदान किया, वह इतिहास का एक स्मरणीय पृष्ठ बन चुका है। वह गीत इस प्रकार था-

तुम्हारी कृपा से जो आनंद पाया।
वाणी से जाये वह कैसे बताया॥
तुम्हारी कृपा से अजी मेरे भगवन।
मेरी जिंदगी ने अजब पलटा खाया॥

अमीर सुधा, पृष्ठ 2

निश्चित रूप से महर्षि दयानन्द रूपी पारस पत्थर को छूकर मेहता अमीचंद सोना बन गए।

प्रभु नाम तू सिमर ले...

प्रभु नाम तू सिमर ले,
कहीं रात ढल न जाये
जीवन का क्या भरोसा,
कहीं जा निकल न जाये
दुनिया के झंझटों में,
जीवन है तेरा बीता
किस काम से तू आया,
किस काम बीत जाये
प्रभु नाम तू सिमर ले....

'आर्य-प्रेरणा' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वीर सावरकर की 140वीं जयन्ती (28 मई 2023)

आपकी आयु 82 वर्ष 8 माह 29 दिन की है। ❑ आपने 19 पुस्तकें लिखी। प्रथम पुस्तक हिन्दुत्व है। ❑ इसी पुस्तक को पढ़कर डॉ. हेडगेवार हिन्दूवादी बने और 1925 में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना की जो आज विश्व का सबसे बड़ा संगठन है। ❑ आपने 1923 में प्रथम बार हिन्दुत्व शब्द का प्रयोग किया था। ❑ आपने सर्वाधिक समय तक कारावास और नजरबंदी भोगी। ❑ आप 1937-38 के हिन्दू महासभा के अहमदाबाद अधिवेशन में पहली बार आए। आपको राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया गया। आप लगातार 5 वर्ष तक राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे। ❑ आपने तर्क और प्रमाण देकर सिद्ध किया था कि अविभाजित भारत हिन्दू राष्ट्र है। ❑ जिन्ना मानते थे कि सावरकर ही हिन्दुओं के वास्तविक नेता हैं। ❑ जिन्ना और सावरकर की भेंट कभी नहीं हुई। ❑ जिन्ना ने उन्हें बुलाया था। उत्तर में सावरकर ने कहा था कि आयु में मैं बड़ा हूँ इसलिए पहले आप आएं। ❑ जिन्ना ने कहा था कि हिन्दुओं को गांधी-नेहरू पर भरोसा नहीं करना चाहिए क्योंकि वे कायर और डरपोक हैं ❑ लम्बे समय तक मार खाते-खाते हिन्दू मृत प्राय: हो गया था अत: उसने सावरकर को नेता नहीं माना। ❑ यदि लौह पुरुष सरदार पटेल-मदन मोहन मालवीय डॉ. भाई महावीर आदि अपने साथियों सहित हिन्दू महासभा में आ गए होते तो 1945-46 के चुनाव में हिन्दू महासभा के कई सांसद चुने जाते फिर कांग्रेस अपनी मन मर्जी नहीं कर पाती। ❑ वीर सावरकर को भाई परमानन्द डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के साथ ही चुनाव लड़ना पड़ा। जीत 16 प्रतिशत मिली। सांसद कोई नहीं चुना गया। ❑ वीर सावरकर ने 15 अगस्त 1947 को तिरंगे के साथ भगवा ध्वज भी अपने निवास पर लहराया था।

-इन्द्रदेव गुलाटी, वित्तमन्त्री सावरकर सभा बुलन्दशहर, मो. 8958778443

यज्ञ महिमा

ऋतं शंसन्त ऋजु दीध्याना दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीरा:। विप्र पदमङ्गिरसो दधाना यज्ञस्य धाम प्रमं। मनन्त।।

- ऋ. 10/67/2। ऋषि: **अयास्य:।।** देवता-**बृहस्पति:।।** छन्द: **निचृत् त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ- **ऋतं शंसन्त:**=सत्य ही कहने वाले, **ऋजुदीध्याना:**=अकुटिल ध्यान करने वाले, **असुरस्य**=प्रज्ञावाले **दिव:**=दिव के, 'द्यौ' के **वीरा: पुत्रास:**=वीर पुत्र, **विप्रं पदंधाना:**=और जो ज्ञानमय या व्यापक पद को धारण किये हुए हैं, ऐसे **अङ्गिरस:**=अङ्गिरस लोग यज्ञस्य प्रथमं धाम=यज्ञ के परम मुख्य स्थान को **मनन्त**=जानते हैं।

विनय-'यज्ञ-यज्ञ' सब कहते हैं, परन्तु यज्ञ के मूलतत्त्व को जानने वाले कोई विरले ही होते हैं। हम तो इतना जानते हैं कि जगत्-हित के लिए स्वार्थत्याग के कार्य करना यज्ञ है। इतना ठीक भी है, परन्तु यज्ञ के प्रथम रूप से हम बहुत दूर हैं। यदि हमें कहीं वह रूप दिख जाए तब तो हम देख लें कि यज्ञ ही हमारा प्राण है, हमारा जीवन है, यज्ञ तो हमारे एक-एक श्वास में होना चाहिए। इस यज्ञ के 'प्रथम धाम' (मुख्य स्थान) को साक्षात् देख लेते हैं वे अंगिरस कहते हैं, क्योंकि ऐसे लोग इस जगत्-शरीर के अंगों के रस होते हैं। ये वे महात्मा पुरुष होते हैं जो संसार को ठीक रास्ते पर ले जाते हुए संसार के प्राणरूप होते हैं। संसार में जो पाप, अधर्म और स्वार्थ की शक्तियाँ प्रवृत्त हो रही हैं उनसे संसार का जीवन रस सूख जाए यदि ये 'अङ्गिरस' उसमें निरन्तर धर्म-धारा न बहाते रहें। इन अङ्गिरसों को बार-बार प्रणाम है। परन्तु हमें तो यह जानना चाहिए कि ये 'अङ्गिरस्' महात्मा कैसे बनते हैं? इनके चार लक्षण हैं- (1) ये सत्य ही बोलते हैं, ये सत्य का ही वर्णन करते हैं (2) केवल इनकी वाणी में ही सत्य नहीं होता किन्तु इनके ध्यान व विचार में भी कुटिलता नहीं आने पाती, इनके विचार में मन में भी असत्यता नहीं आती (अतएव) इनकी बुद्धि इतनी सच्ची और प्रकाशपूर्ण होती है कि इन्हें समष्टि बुद्धि रूप जो 'द्यौ' है उसके पुत्र कहना चाहिए और (3) ये वीर पुत्र होते हैं, क्योंकि संसार सदा अज्ञान-शत्रु पर विजय पाने के लिए अग्रसर रहता है, (4) और ये 'द्यौ के पुत्र' अपने में 'विप्रपद' को, ज्ञानमय व्यापक पद को धारण किये होते हैं-भगवान् को, भगवान् के एक ज्ञानमय व्यापक रूप को, अपने में धारण किये फिरते हैं। हे यज्ञकर्मों द्वारा ऊँचे चढ़ने की इच्छा रखने वाले और यत्न करने वाले भाइयो! अङ्गिरसों के इन चार लक्षणों को अपने में रमाते चलो, रमाते हुए चढ़ते चलो।

सम्पादकीय

सत्यार्थ प्रकाशः सोते हुए को जगा दिया

❑ आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, मो. 9810884124

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की वेद प्रचार तथा शास्त्रार्थ किये, पत्र पत्रक, पुस्तकें, लिखी अन्ध विश्वास व पाखण्डों को दूर करने के प्रयास किये। **सत्यार्थ प्रकाश** उनकी लिखी एक ऐसी पुस्तक है जिसने सोते हुए भारतीयों को जगा दिया और आज भी सबको प्रेरणा दे रही है। आर्य समाज विचारों की क्रान्ति का मंच है जहां वैदिक धर्म व भारतीय संस्कृति का प्रकाश जन जन के हृदय में अन्धकार की छाया का प्रतिकार कर रहा है आर्य समाज की प्रेरणा से अनेक क्रान्तिकारी स्वतन्त्रता हेतु बलिवेदी पर न्यौछावर हो गये ऐंसे अनेक वीर पुरुष हुए जिन्होंने वेद प्रचार हेतु अनेक यातनाएं सहीं दुःख उठाए कष्ट उठाए राष्ट्र निर्माण हेतु अपने गरीब परिवारों को छोड़ दिया फिर पीछे मुड़ कर नहीं देखा।

ऐसे ही पण्डित दौलतराम जो आगरा निवासी ब्राह्मण थे आर्य समाजी थे बच्चों को पढ़ाने व वेद प्रचार करने की अधिक लगन थी उनका अपना परिवार अत्यन्त निर्धन था अपना घर छोड़ वह झांसी पहुँच गए वहां पाठशाला व अनाथालय खोला जहां बिना कोई शुल्क लिए बच्चों को पढ़ाना आरम्भ कर दिया, इस हेतु वहां के निवासियों ने अनाथालय के संचालन हेतु प्रतिदिन एक मुष्टि आटा घड़े में डालना आरम्भ कर दिया पण्डित दौलतराम बच्चों को पढ़ाने का कोई शुल्क नहीं लेते थे उन्होंने रविवार को आर्य समाज के सत्संग का आयोजन भी आरम्भ कर दिया। यह देखकर छावनी

के अनेक सैनिक भी सत्संग में आने लगे। कुछ सैनिकों ने पण्डित दौलतराम से सैनिक छावनी में भी सत्संग करने की प्रार्थना की। वहां छावनी में पण्डित दौलत राम ने सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास की कथा की कुछ आर्य समाज के विरोधियों ने इसकी शिकायत छावनी के अधिकारियों से की। पुलिस ने पण्डित दौलत राम पर दफा 108 का अभियोग चला दिया।

न्यायाधीश श्री जे.सी. स्मिथ थे उन्होंने 29-9-1908 को इस मामले में निर्णय करते हुए पण्डित दौलत राम को उत्तम व्यवहार के लिए झांसी के प्रतिष्ठित नागरिकों द्वारा नेक चलनी की दो जमानतें देने का अथवा एक वर्ष के कठोरतम कारावास का दण्ड दिया। न्यायाधीश का कहना था कि पंडित दौलत राम बच्चों से कोई शुल्क नहीं लेता अच्छे कपड़े पहनाता है, उसने कुछ व्यक्तियों को इसलिए राजी किया है कि अपने घरों में रखे मटकों में प्रतिदिन एक मुट्ठी भर आटा डाल दिया करें उसके अनुसार प्रति सप्ताह तेतीस सेर आटा एकत्र हो उसे मिल जाता है।

झांसी के समाचार पत्रों ने जिला मजिस्ट्रेट स्मिथ के इस निर्णय की अत्यधिक आलोचना की थी। कहने का तात्पर्य यह है कि आर्य समाजी अपनी लगन व धुन के पक्के होते थे उन्होंने अपने घर परिवार की भी परवाह नहीं की। वह संसार की भलाई के लिए ही जिये, परोपकार के लिए यातनाएं सही, जेल गए, आर्य समाज का कार्य संसार के उपकारार्थ ही तो है। सत्यासत्य के निर्णय के लिए है, **सत्यार्थ के प्रकाश** के लिए है। उनसे प्रेरणा लें आज तो हम स्वतन्त्र हैं वह कठिन परिस्थितियां भी नहीं हैं। प्रचार कार्य और तीव्र करें।

अपना सहयोग प्रदान करें।

आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली की गतिविधियों को सुचारु रूप से चलाने के लिए अपना सहयोग प्रदान करते रहें। आप अपना सहयोग क्रॉस चैक द्वारा आर्य समाज राजेन्द्र नगर के नाम से कार्यालय: आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली के पत्ते पर भिजवाये अथवा सीधा ऑनलाइन भी जमा कर सकते हैं। खाता संख्या-3075000100082363, IFSC-PUNB307500, पंजाब नेशनल बैंक।

-अशोक सहगल (प्रधान)

महर्षि दयानन्द जी के 200वीं जन्म शताब्दी वर्ष

महर्षि दयानन्द ने अपनी विमल वाणी से लोगों को उपदेश दिया।
अपनी अनोखी दीप शिखा जलाकर दुनिया को उज्जवल किया।
अपने अमर संदेश से जगमग करके मानस तिमिर को भगा दिया।
वेद क्या है, विद्या क्या है, बुद्धि के अन्तर में ज्ञान को जगा दिया।
भाष्य व्याकरण के सही शब्दों से वेदों को समझा दिया।
अपने विलक्षण कठोर तप द्वारा सत्य क्या है, उसका अर्थ बतला दिया।
सत्यार्थ-प्रकाश का दीप जला कर दुनिया को रौशन कर दिया।
प्राणायाम, योग तप द्वारा मन और तन को बलवान बनाना सिखा दिया।
अनाचार, अत्याचार से कैसे लड़ना, हम सब को समझा दिया।
कमजोरों को, स्त्री जाति को सम्मानित करना भी सिखला दिया।
स्वयं बुराईयों से लड़ लड़ कर,
समाज को व्यवस्थित करने की राह दिखा दिया।
अपनी दया-दृष्टि, करुण प्रवृति से दुश्मन को भी क्षमा का पाठ पढ़ा दिया।
अपनी प्रचंड दृष्टि से ज्योति जलाकर अन्धविश्वास को भस्म किया।
शिला-खण्ड की मूर्ति पूजा को पाखंड बताकर
सच्चे शिव का रूप बतला दिया।
समाज को व्यवस्थित करने हेतु आर्य-समाज का गठन किया।
जिसके कारण आज हम सब तेरी कृपा के ऋणी हैं।
हे कृपालु, आज विश्व मन रहा है
उस महर्षि की 200वीं जन्म वर्ष गांठ को,
जिसने सबको अमृत पिलाकर स्वयं विष का पान किया।
तुझे शत् शत् प्रणाम। जय ऋषिवर।।

प्रयासरत रहने से मिलेगा प्रसाद

प्रयास करने वालों को ही प्रसाद मिलता है। इसलिए प्रयासरत हो जाइए अपने वास्तविक स्वरूप को प्राप्त करने के लिए, क्योंकि प्रसाद बाहर से नहीं अन्दर से प्राप्त होगा, मतलब बाहर के दिखावे से काम नहीं चलेगा, आन्तरिक योग्यता ही काम आएगी। अपने आपको योग्य बनाना पड़ेगा, जब योग्यता आ जाएगी तो परमात्मा के प्यारों में गिने जाने लगोगे, आपका चुनाव हो जाएगा। आप प्रसाद के हकदार बन जाओगे। प्रसाद क्या है? कर्मशीलता और कर्त्तव्य परायणता ही प्रसाद है। वही व्यक्ति हंसता-मुस्कराता हुआ जीवन की यात्रा का गतिशील रख सकता है, जो सदैव प्रयत्न रहता है।

पुत्र जब योग्य हो जाता है तो पिता उस पर भरोसा करता है, उसे अपना सर्वस्व सौंप देता है और निश्चित रहता है। जिस दिन आप योग्य हो जाएंगे, पिता परमात्मा आपको चयन कर लेंगे, आपको सब कुछ बिन मांगे ही प्राप्त हो जाएगा। इसलिए योग्यताएं इकट्ठी कीजिए, सद्गुणों से अपने जीवन को सजाइए, अच्छाईयों के लिए प्रयासरत रहिए, आपके सतत प्रयासों से ही प्रसाद रूपी फल आपको मिल जाएगा।

कर्त्तव्य निभाने का जिम्मेदार इंसान का अपना धर्म है, उससे आगे की जिम्मेदारी परमात्मा की है। वातावरण, घर-परिवार, दुनियादारी तो यथावत रहेगी, शक्लें बदल-बदलकर नाम बदल-बदल कर संघर्ष आपके सामने आएंगे, प्रतिदिन अपने मन को एडजेस्ट करना पड़ेगा, प्रयास कभी नहीं छोड़ना होगा, हमेशा प्रसार के लिए मेहनत करनी होगी, तालमेल बिठाकर भी चलना पड़ेगा। किसी की प्रतीक्षा में मत रहना क्योंकि प्रतीक्षा करने वाले पिछड़ जाते हैं, मंजिल तक वही पहुंचता है जो प्रयास लगातार करता रहता है।

अपने आपको जानें

अयं कविरकविषु प्रचेता मर्त्तेष्वग्निरमृतो नि धायि। स मा नो अत्र जुहुरः सहस्वः सदा त्वे सुमनसः स्याम॥ (ऋक्. 7/4/4)

शब्दार्थ-अयम्-यह, **प्रचेताः अग्नि**-चेतन अग्नि, **अकविषु कविः**- इन अकवियों में कवि होकर, **अमर्त्येषु अमृतः**- इन मरने वालों में अमृत होकर, **निधायि**- निहित है, रखा हुआ है। **सहस्वः**-हे बल-तेज-शक्ति वाले, **सः**- वह तू, **नः**- हमें, **अत्र**-इस संसार में, **मा**-कभी मत, **जुहुरः**- विनष्ट कर, किन्तु हम, **सदा**-सदा, **त्वे**-तुझमें, **सुमनसः**- अच्छे मन वाले, प्रसन्नता पाने वाले, **स्याम**-बने रहें।

हम क्या हैं? यह हम नहीं जानते। हम जिसे 'हम' समझते हैं वह तो केवल बहुत सी विनश्वर वस्तुओं का ढेर है। फिर भी जो हममें ज्ञान, चैतन्य शक्ति और आनन्द दिखाई देता है वह जिस एक वस्तु के कारण है वही हमारे अन्दर एक मात्र अविनश्वर तत्व है। यह हमारा अग्नि है, आत्मा है और वही असली हम हैं। इन हमारे देह इन्द्रिय आदि भौतिक जड़ वस्तुओं में वही एकमात्र (प्रचेता) है, चेतन है। इन अकवियों में वह कवि है, इन अक्रान्तदर्शियों में वह क्रान्तदर्शी है, इन बोल न सकने वालों में बोलने की शक्ति देने वाला है, इन असुन्दर, अकाव्यमय वस्तुओं में वह सुन्दर काव्यमय है। वही इन विनाशशील मरने वाले मर्त्य अनग्नियो में एक अविनश्वर अमृत अग्नि है। वही असली हम हैं, आत्मा हैं। ओह! इसकी उपेक्षा कर जो अबतक हम दिन-रात दूसरी जड़, क्षणभंगुर वस्तुओं की सेवा-शुश्रूषा करने में लगे रहे हैं यह हमने कितना अनर्थ किया है! हे आत्मन्! आज तुझे पहचानकर हम देखते हैं कि इन्द्रिय-मन-प्राण आदि में जो बल, तेज सामर्थ्य दिखाई देता है वह इनमें नहीं है, वह सब तो तुझमें है, इसलिए हे अग्ने! सहस्वः। हे बल, तेज, शक्ति के भण्डार! तू इस संसार में हमारा कभी विनाश मत कर। हमने अबतक बेशक तुझ अपनी अग्नि को भूलकर बड़ा आत्मघात किया है, पर अब हम कभी ऐसा आत्मघात न करेंगे। हमें अब एकमात्र तेरी ही प्रसन्नता चाहिए। यह सब जग बेशक रूठ जाए, पर हम अब तुझे कभी रूठने न देंगे। हे अन्दर बैठे अन्तरात्मन्! जबतक हमारे प्रति तुम सुमना हो, चाहे फिर दुनियावाले हमारी निन्दा करें, धिक्कारें, हमें कुछ परवाह नहीं, इस सब मर्त्य दुनिया को छोड़कर हम केवल तुझे प्रसन्न रखेंगे। चूंकि तू ही सब-कुछ है, निश्चय से हमारा सब कुछ है।

MESSAGE OF GITA

❑ **Dr. Mahesh Vidyalankar**

Cotinue from last issue

It is the teaching of Gita that the death is like amrit (elixir). The death makes human life valuable. It is the death which inspires, rather forces, the man to speed up the matters and conclude them before it is too late. As if it says, "Hurry up. No one is sure of the breath, the sign of life. Inhaling may not necessarily be followed by exhaling." Exhaling is the sign of life; not exhaling is the death. Every person has to pass through the stages of old age and death. No one has so far been above these compulsions. Old age means unavoidable afflictions of the body. The diseases, troubles, agonies, difficulties occurring to the body in the old age, cannot be cured by any power that be- a physician, a surgeon or an ascetic for that matter. Only the death can cure them; better say, only death is their cure. Suppose, the old age has arrived. The cunctioning efficiency of the senses has come down considerably, the body has been afflicted with a number of diseases, rendering it rather a liability. It has started stinking. The son, wife and other near and dear ones shirk coming close to it. The condition is pitiable. No earthy power can rid the body of this condition. At this moment, the death pays a visit. It gives the rotten, stinking body a new life. Everybody wants to kiss, see, and love the new body. No material and physical power on the earth can do such a miracle and bring about a change as can the death. Therefore the death is like an elixir, the true life-giver. That is why it is said to have great complemental value; i.e. one which completes the incomplete.

Gita says: live upto the ripe age in this world. Be complete before you leave; incompleteness is not the ideal. Life is like a crop. The crop is first ripened, then it is cut and dried, and finally it is harvested. Death visiting the body, already ripened on account of old age, is a natural development. The death imparts completeness to human life. There are three types of fruit on the tree. First, those which are plucked before the ripen; they have no juice and sweetness and are hard to be plucked, requiring an extra ounce of energy. Second, those which ripen on the tree and become rotten while still on the tree. They are of no use to anyone. Lastly, there are fruits which ripen on the tree and then leave it, dropping down on the earth and also be of use to some one. In the process, they leave the seeds in the womb of the mother earth which gives birth to new fruit-bearing trees. Similarly, the death is worth hailing in which the body meets its end, suffering the least from diseases, troubles and agonies. Such a death is called a natural death. It is also referred to as कालमृत्यु (timely death). Untimely death is one which overtakes the body before it completes its normal life span.

Says Lord Krishna: 'O Arjunal! Do not worry about death; rather ponder over it. One who does not fear death is called mrityunjaya (one who has conquered death). Death is the part of life in the body. The essence of the body is the soul. Take essence of the body is the soul. Take care of it and contemplate over it. Those who know themselves, do not fear death. For a self-knowing person the death is a natural change (of body). Those who fear God, do not fear death. They are confident of being reborn as humans on the strength of their noble deeds; their good actions ensure the human form of life in the next birth; Gita also says: युक्ताहार विहारस्य युक्त चेष्टस्य कर्मसु।

"A man can increases his life-span by observing right kind of food, movements and other kinds of activities." Life-span depends on breaths, which is a game of numbers. There are people , who exhaust their wealth of breaths rather early. Then there are people who succeed in augmenting strength of their breaths by yama (doing moral duty), niyama (restraining the mind), sanyama (self-restraint), pranayama (controlling breathing while remembering God), yogabhasa (practice of meditation), brahmacharya (religious studentship), and so on. His life-span is extended. Wicked actions quicken the rate of breathing. During the company of the good, religious discourse, service to the people, and acts of bhakti, our breathing is normal. It depends on us, how we spend and utilize our breaths. The unwise waste them in worldly pleasures, passions, diseases, griefs, tensions and so on. The wise live a life of regularity, restraint and sobriety and live long. Gita drives the fear of death out of the man`s mind and also tells him how to be free of fear of death. One who studies and understands Gita, does not fear death and is also not pestered by grief and worries. The wise take the death as a natural change and abandon the body calmly. While doing that the wise do not cry and never regret over the past. They complete the journey of life remembering God. This is the simple knowledge Gita gives us about death.

सन्तवाणी

प्रश्न - जल से पतला कौन है, कौन भूमि से भारी? कौन अग्नि से तेज है, कौन काजल से काली?
उत्तर - जल से पतला ज्ञान है, और पाप भूमि से भारी।
क्रोध अग्नि से तेज है और कलंक काजल से काली।
प्रश्न - वह क्या है जिसे इंसान मर जाने पर छोड़ जाता है?
उत्तर - अपने भले-बूरे कर्म।
प्रश्न - मनुष्य कब बनता है और कब बिगड़ता है?
उत्तर - मनुष्य सत्संग से बनता है और कुसंग से बिगड़ता है।
प्रश्न - सच्चा दोस्त कौन है?
उत्तर - जो विपत्ति में साथ दे और सब समय नेक सलाह दे।
प्रश्न - जिसका दुनिया में कोई नहीं होता उसका कौन होता है?
उत्तर - उसकी खुद की हिम्मत और उसका भगवान।
प्रश्न - वह कौन सी दौलत है, जो बाँटने से खत्म नहीं होती?
उत्तर - वह है ज्ञान की दौलत।
प्रश्न - झूठ कब तक जिन्दा रहता है?
उत्तर - जब तक सच्चाई झूठ के मुखौटे में छिपी रहती है।
प्रश्न - अंध कौन है?
उत्तर - अंध वह नहीं, जिसकी आँखें नहीं हैं। अन्ध वह है, जो अपने दोषों को ढकता है।
प्रश्न - अनाचार कब बढ़ता है?
उत्तर - जब सदाचोर चुप रहता है।
प्रश्न - मानव को दानव कौन बनाता है?
उत्तर - उसका अहंकार।
प्रश्न - कौन इंतेजार नहीं करते?
उत्तर - मौत और समय।
प्रश्न - मनुष्य धोखा कब खाता है?
उत्तर - जब वह अपने को चालाक और दूसरे को बेवकूफ समझता है।

माँ की परिकल्पना

- समुन्द्र ने कहा-माँ गहराई का अनमोल रत्न है जो अपनी औलाद के लाखों गम दिल में छिपा लेती है।
- बादल ने कहा-माँ वह चमक है जिसमें हर रंग साफ तौर से दिखाई देता है।
- शायर ने कहा- माँ एक ऐसी गजल है जो हर दिल वाले के दिल में उतर जाती है।
- माली ने कहा-माँ बाग का वह खूबसूरत फूल है जिससे पूरे बाग को खूबसूरती और महक मिलती है।
- जज ने कहा- माँ वह शब्द हे जिसकी तारीफ के लिए अल्फाज नहीं मिलते।
- दुआ ने कहा-माँ वह है जो अपने बच्चों की खुशहाली के लिए भगवान से दुआ मांगती है।
- भगवान ने कहा- माँ मेरी ही तरफ से एक बहुत ही कीमती तोहफा है।
- जन्नत ने कहा-माँ वह जज्बा है जिसके कदमों तले मैं हूं।
- दुनिया ने कहा-माँ नूर है, महक है, मोहब्बत है, दुआ है, जन्नत है, तोहफा है, अनमोल जज्बा है।

दान देते समय सेवक भाव में रहें

मा प्रगाम पथो वयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः। मान्तः स्थुर्नो अरातयः॥(ऋग्वेद 10/57/1(अथर्ववेद 13/1/59)

धन से प्रायः लोगों को प्रमाद हो जाता है जिससे लोग कुमार्गगामी हो जाते हैं। इसलिए धन प्राप्त करें पर कभी उन्मत्त न हों और दानशील बनें। समाज की उन्नति लोगों के सन्मार्ग पर चलने से ही होती है। असत् मार्ग सदा पतन का कारण बनता है। सन्मार्ग को अपनाने से समाज में नैतिकता, पवित्रता और शुद्धता आती है। समाज में यदि अशुद्धि और अनैतिकता होगी तो वह जन साधारण तक पहुंचकर आंतरिक दोष उत्पन्न करेगी, अतः कभी भी असत् मार्ग को प्रोत्साहन नहीं देना चाहिए। समाज में सभी लोग ईश्वर के दिव्य गुणों को अंगीकार करते हुए सन्मार्ग पर चलें और यज्ञीय भावना से सबके उपकार के लिए पुरुषार्थ करते रहें। हानिकारक दुःखदायी पापकर्मों से अपने को बचाए रखें तथा धर्म पालन व पुण्य संचय के सर्वसुलभ लाभकारी मार्ग पर बढ़ते रहें। ऐसे पुरुषार्थी व संयमी जीवन से जो अनुदान, वरदान प्राप्त हों उन्हें ईश्वर की कृपा समझकर रखें और अहंकार न करें। सब कुछ ईश्वर का है। हम तो उसके चाकर मात्र हैं। उसने जिस कार्य के लिए हमें नियुक्त किया है, उसे पूरे मनोयोग से हमने किया है। फलतः उसने जो कुछ हमें दिया है वह भी उसी का है। जब हम उस धन को अपना समझने की भूल करते हैं तभी मन में अहंकार आता है। जो वास्तव में हमारी क्षुद्रता को ही प्रकट करता है। हम जो भी कमाते हैं उसका एक अंश धर्म के लिए और एक यश के लिए दान करने का विधान है। दान देने के लिए धैर्य और आत्मविश्वास बहुत आवश्यक है। मुझमें सब कमाने की योग्यता है, जिसमें ऐसा विश्वास होता है, वही दान दे सकता है और देता है। जो अयोग्य और असमर्थ होता है वह धन को घेर कर बैठ जाता है। दान देते समय हमारे मन में सेवक भाव होना चाहिए। आत्मबल और ईमानदारी सात्विक जीवन रथ के दो पहिए हैं। प्रगति के लिए, जीवन में सुख व शांति के लिए तथा यश व कीर्ति के लिए प्रत्येक व्यक्ति को इसी पथ पर चलने का प्रयास करना चाहिए। स्वयं भी ईमानदारी, पुरुषार्थ तथा परमार्थ का पालन करें और दूसरों को भी उसी मार्ग पर प्रेरित करें।

आर्य स्त्री समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली द्वारा

71वां वार्षिकोत्सव सौल्लास सम्पन्न

प्रथम चित्र में आचार्य प्रेम पाल शास्त्री जी अपना आशीर्वाद वचन देते हुए, द्वितीय चित्र में आचार्य शिवदत्त पाण्डेय जी प्रवचन करते हुए।

सभी अतिथियों का धन्यवाद उमा अब्बी प्रधाना जी ने किया। कार्यक्रम का संचालन ललिता कुमार जी एवं मन्त्राणी सकुन्तला कालरा जी ने किया। **आर्य स्त्री समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली आर्य महिला सम्मेलन** दिन शनिवार 22 अप्रैल 2023 को शुभारम्भ यज्ञ से हुआ जिसकी ब्रह्मा सुश्री मृदुला चोटानी जी रही। तत्पश्चात् ध्वजारोहण हुआ। सभागार में सभी माताओं एवं बहनों द्वारा स्वागत गीत गाकर स्वागत किया गया। मुख्य कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती उषा मलिक जी ने वेदों के सन्देश को घर-घर तक पहुंचाने का संकल्प लेना है। मुख्य वक्ता श्रीमती प्रतिभा जी ने कहां कि मनुष्य मात्र को किस प्रकार से जीना है। इसका आधार वेद है। डॉ. सन्तोष कपूर जी, रचना आहूजा जी, इन्द्रशर्मा जी, कान्ता आर्य जी, प्रकाश कथूरिया जी, शशि प्रभा जी, सरिता जी, कमलेश जी, अंजना मदान, सुरेखा सभी ने विचार प्रस्तुत किये।

Delhi Postal R.No. DL(C)-14/1431/2021-23
Posted at SRT Nagar PO, New Delhi-55
Posting Date: 7-8 Every Month

आर्य प्रेरणा

मई-2023

आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली द्वारा

71वां वार्षिकोत्सव पर बाल सम्मेलन कार्यक्रम सम्पन्न

आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली दिन रविवार 23 अप्रैल 2023 को आर्य समाज के प्रांगण में प्रात: कार्यक्रम की शुरुआत हुई। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी और मुख्य यज्ञमान कुलदीप गैरा परिवार रहे। प्रात: यज्ञ में समस्त समाज के सदस्य तथा आर्य परिवार व अनेक संस्थाओं के सदस्य उपस्थित रहे। मुख्य कार्यक्रम में चित्र कला प्रतियोगिता, देश भक्ति गीत, भाषण वाद विवाद, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता किये गए। सम्मेलन के अध्यक्ष श्री राज बजाज जी ने भारत की वैश्विक चिन्तन और विश्व में भारत का अमूल्य योगदान रहा है। मुख्य अतिथि श्रीमती सरिता जैन ने सभी प्रतियोगियों के कार्यक्रम को देखकर बहुत ही प्रसन्नता व्यक्त की। राष्ट्र धर्म ही सर्वोपरि हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। विशिष्ट अतिथि श्रीमती चित्रा नागर जी, श्रीमती रजनी नागर जी ने सभी को शुभकामनाएं दी। श्रीमती प्रेरणा वर्मा जी (बागपत) ने बच्चों के सभी कार्यक्रम देखकर कहा कि सच्चे अर्थों में आर्य समाज ही अच्छा संस्कार दे रहा है। वैदिक विद्वान आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी ने कहा वर्तमान युवा पीढ़ी दिग्भ्रमित की जा रही है। युवाओं को आरम्भ से ही अच्छे संस्कार देशभक्ति, ईश्वर भक्ति तथा परोपकार इत्यादि संस्कार देने चाहिए। आर्य समाज के यशस्वी प्रधान श्री अशोक सहगल जी ने कार्यक्रम के संयोजक श्री सुरेश चुघ, सुनील आर्य एवं समस्त टीमवर्क को बधाई दी।

- संयोजक सुरेश चुघ एवम् सुनील आर्य

श्री वेद प्रकाश जी को श्रद्धांजलि

आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली के कोषाध्यक्ष सतीश कुमार जी के बड़े भाई वेद प्रकाश जी का 20 अप्रैल 2023 को सायंकाल आकस्मिक निधन हो गया। अन्तिम संस्कार में उनके परिवारजनों, वैदिक विद्वानों, आर्य जनों, गणमान्य लोगों ने नम आंखों से उन्हें भावभिनी विदाई दी।

Printed and published by Mr. Narinder Mohan Walecha secretary on behalf of Arya Samaj, Rajinder Nagar and printed at Mayank Printers, 2199/63, Naiwala, Karol Bagh, New Delhi-110005 and published at Arya Samaj, Rajinder Nagar, New Delhi-110060.
Editor: Aacharya Gavendra Shastri